प्रश्नः

''ज़्या नये नियम की कलीसिया में याजक होते हैं?''

उज़रः

''याजकाई'' का विषय बाइबल के प्रमुख विषयों में से एक है। यह विषय पुराने और नये नियम दोनों में ही पाया जाता है। आइए इस विषय पर विस्तार से ध्यान देते हैं।

पुराना नियम बनाम नया नियम

पुराने नियम में याजकाई विश्वव्यापी नहीं थी। सभी इस्राएलियों को याजकों के रूप में सेवा करने की अनुमति नहीं थी। केवल हारून, उसके पुत्र और उसके पोते ही ''अपने याजक पद की रक्षा'' कर सकते थे और याजक के दायित्व को पूरा करने की कोशिश करने वाला साधारण व्यज़्ति ''मारा डाला'' जाना था (गिनती 3:10)।

पुराने नियम की यह विशेष बात नये नियम में नहीं होनी थी। इसके विपरीत, ''मसीही'' नाम अपनाने वाले सब लोगों को (1 पतरस 4:16) अपने सृष्टिकर्ज़ा के द्वारा याजकों का पवित्र समाज होने का सज़्मान दिया जाता है। यीशु के द्वारा, उसकी कलीसिया के सदस्य पुराने नियम की तरह पशुओं की नहीं बल्कि ''आत्मिक'' भेंट लाते हैं जो कि परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए बलिदान हैं (1 पतरस 2:5, 9)। प्रेरित यूहन्ना ने मसीह की स्तुति की ''जो हमसे प्रेम रखता है, और जिसने अपने लहू के द्वारा हमें पापों से छुड़ाया है'' और ''[मसीही लोगों को] एक राज्य और अपने पिता परमेश्वर के लिए याजक भी बना दिया; उसकी महिमा और पराक्रम युगानुयुग रहे। आमीन'' (प्रकाशितवाज़्य 1:5, 6)।

यूहन्ना ने मारे गए परन्तु फिर जी उठे मेमने का स्तुतिगान भी दर्ज किया ज़्योंकि उसने सब देशों के लोगों को अपने लहू से मोल लेकर उन्हें परमेश्वर के लिए याजक बनाया था

(प्रकाशितवाक्य 5:9, 10)। ये याजक ''केवल उसी को अपना जीवन समर्पित करते हैं।''[1] इस प्रकार नया नियम, याजकाई के लिए एक विशेष वर्ग को ऊंचा करने के बजाय सब मसीहियों को, नर हों या नारी, जवान हों या बूढ़े याजकों के रूप में दिखता है।

नया नियम बनाम मनुष्यों की परम्पराएं

दुख की बात है कि प्रसिद्ध धर्मों ने एक अलग पुरोहिततन्त्र के पक्ष में नये नियम की धारणा का त्याग कर दिया। यह सिखाया जाता है कि धार्मिक पुरोहितों के पास ''सामान्य'' मसीहियों के पाप क्षमा करने की शक्ति है। पाप मोचन की शक्ति (''मैं तुझे क्षमा करता हूं''), *ए कैथोलिक डिक्शनरी ऑफ़ थियोलॉजी* के अनुसार ''पुरोहित-तन्त्र'' है। इस डिक्शनरी में यह भी दावा है कि यह शक्ति मसीह द्वारा प्रेरितों और उनके उत्तराधिकारियों, अर्थात बिशपों और पुरोहितों को दी गई थी न कि सब विश्वासी लोगों को। हर ''सदस्य'' के लिए पापों का अंगीकार करने के लिए बने बूथ में साल में कम से कम एक बार जाना आवश्यक है। (इसे कई बार ''द ईस्टर ड्यूटी'' के नाम से जाना जाता है।) यदि कोई इसके अनुसार नहीं करता, तो उसे निकाल दिया जाए। परन्तु, जैसा कि *कैथोलिक डिक्शनरी ऑफ़ थियोलॉजी* में लिखा है, ''अंगीकार के बूथ ट्रेंट की सभा तक कलीसियाओं में नहीं होते थे, और शनिवार शाम को छह से नौ बजे तक लोगों के अंगीकार सुनने के लिए प्रेरितों के बैठने की बात सोचना बिल्कुल अजीब होगा।''

पुराने नियम से मिलती-जुलती बातें

हम देखते हैं कि पुराने नियम की याजकाई की विलक्षणता नये नियम की याजकाई की तरह *नहीं* थी। परन्तु हारून की याजकाई के ढंग और मसीही लोगों की याजकाई में कई समानताएं हैं। आइए उनमें से सात समानताओं पर विचार करते हैं:

(1) *धोना।* याजकों के रूप में सेवा की अनुमति से पहले हारून और उसके पुत्रों को ''मिलाप वाले तम्बू के द्वार के समीप ले आकर जल से'' नहलाया जाता था (निर्गमन 29:4; 40:12)। इसी प्रकार, आज मसीही बनने से पहले लोगों की देहों को पानी के बपतिस्मे में ''धोया'' जाता है (प्रेरितों 22:16; देखिए 1 कुरिन्थियों 6:11; इफिसियों 5:26; तीतुस 3:5; इब्रानियों 10:22)।

(2) *छिड़काव।* याजकों के रूप में सेवा की अनुमति मिलने से पहले हारून और उसके पुत्रों पर मेढ़े का लहू छिड़का जाता था (निर्गमन 29:21)। वैसे ही आज याजकों के रूप में सेवा करने से पहले, सांकेतिक तौर पर लोगों के हृदयों पर मसीह का लहू छिड़का जाता है (इब्रानियों 10:22; 12:24; 1 पतरस 1:2)।

(3) *अभिषेक।* विशेष प्रकार का ''अभिषेक का पवित्र तेल'' अर्थात गंधी की रीति से तैयार किया गया सुगंधित तेल उनके शरीरों पर लगाए बिना ही हारून और उसके पुत्र पुराने नियम के याजकों के रूप में पवित्र नहीं होते थे (निर्गमन 30:23-30)। जैतून के तेल और मसालों (दालचीनी, जंगली दालचीनी और कैलमुस) के इस्तेमाल के सम्बन्ध में मूसा को

विशेष निर्देश दिए गए थे।

याजकों के बदन से मोहक सुगंध निकलती थी (भजन संहिता 133:1, 2)। प्रभु ने कहा था कि यह पवित्र अभिषेक ''उनकी पीढ़ी पीढ़ी के लिए उनके सदा के याजक पद का चिह्न'' होना था (निर्गमन 40:15)।

तुलना करने पर, मसीही लोगों को भी बपतिस्मे के पानी से अपनी देहों को धुलवाकर और यीशु के लहू से अपने हृदयों पर छिड़काव करवाकर अभिषेक मिलता है: उन्हें पवित्र आत्मा मिलता है, जिसे परमेश्वर अपनी आज्ञा मानने वालों को देता है (प्रेरितों 5:32)। पौलुस के अनुसार, अभिषेक करने वाला परमेश्वर ही है। वह ''हमारे मनों में'' आत्मा की छाप लगाता और हमें आत्मा ज़्याने में देता है।

(4) *लिबास।* हारून और उसके पुत्रों के लिए ''अच्छी किस्म के कढ़ाई किए हुए'' वस्त्रों के सज़्बन्ध में परमेश्वर ने साफ़ बता दिया (निर्गमन 35:19; 39:1)। पवित्र सेवा के लिए याजकों द्वारा कमर से जांघ तक ढांपने के लिए सनी के कपड़े की जांघिया पहननी आवश्यक थी ताकि कहीं ऐसा न हो ''कि वे पापी ठहरें और मर जाएं'' (निर्गमन 28:42, 43)। ''सूक्ष्म बटी हुई सनी के कपड़े की और नीले, बैंजनी और लाल रंग की कारचोबी काम की हुई पगड़ी'' के दूसरे कपड़ों के साथ ''बुनी हुई सूक्ष्म सनी के कपड़े के अंगरखे'' ''विभव और शोभा के लिए'' सजाए जाते थे (निर्गमन 39:27-29; 28:40)। इसके अलावा, सही ढंग से पोशाक पहना हुआ याजक शान और शोभा के लिए सिर भी ढांपता था (निर्गमन 28:40)। इस प्रकार परमेश्वर का यह विशेष प्रतिनिधि न केवल अपनी विशेष सुगंध से अच्छा प्रभाव देता था बल्कि उसके वस्त्र भी उसे आकर्षक बना देते थे। जीवन पवित्र वस्त्र में परमेश्वर की सेवा करते हुए शुद्ध और समर्पित करने वालों द्वारा (2 इतिहास 20:21; भजन संहिता 29:2) इन वस्त्रों को पहनना प्रभु की योजना के अनुसार होता था।

मसीही लोगों की सही और स्वीकारने योग्य पोशाक में शालीनता होना आवश्यक है, परन्तु मसीही स्त्रियों के लिए केवल पर्याप्त वस्त्रों से कुछ बढ़कर दिशा - निर्देश शामिल किए गए हैं कि उनके वस्त्र सुहावने और ढंग के होने चाहिए (यू.: *kosmio;* 1 तीमुथियुस 2:9)। मसीही स्त्रियों को शारीरिक अर्थात बाहरी पोशाक से नहीं बल्कि नम्रता और मन की दीनता की अविनाशी सजावट से सुसज्जित होने पर ज़ोर देना चाहिए (1 पतरस 3:4)। मसीही पुरुषों के लिए कोई निर्देश नहीं दिया गया था, उन्हें अपने महिला साथियों की तरह मन की अंदरूनी पोशाक की सजावट पर ध्यान देने के लिए अपनी समझ का इस्तेमाल करने के लिए छोड़ दिया गया था। ऐसे पहरावे से, न्याय के दिन वे नंगे नहीं मिलेंगे (2 कुरिन्थियों 5:3 देखिए)। सब मसीही लोगों को सदा तक रहने वाला पहरावा महंगे कपड़े नहीं बल्कि चमकदार महीन रेशम है जो धर्म के काम हैं (प्रकाशितवाज़्य 19:8)। नया नियम सब मसीही लोगों को जो लिबास पहनने पर ज़ोर देने का निर्देश देता है, वे ये हैं:

> ... बड़ी करुणा, और भलाई, और दीनता, और नम्रता, और सहनशीलता धारण करो। और यदि किसी को किसी पर दोष देने का कोई कारण हो, तो एक दूसरे

> की सह लो, और एक दूसरे के अपराध क्षमा करो: जैसे प्रभु ने तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी करो। और इन सब के ऊपर प्रेम को जो सिद्धता का कटिबन्ध है बान्ध लो (कुलुस्सियों 3:12-14)।

(5) *व्यवहार।* हारून के घराने के याजकों के लिए मूसा के ईश्वरीय निर्देशों का पालन चौकसी से करना आवश्यक होता था। किसी याजक के लिए प्रभु की आज्ञा से दी गई उस पवित्र सेवा में कुछ भी जोड़ने या कम करने का अर्थ ढीठ होना होता था (व्यवस्थाविवरण 4:2; 12:32; नीतिवचन 30:6)। अनजाने में किए गए पापों के लिए, परमेश्वर की व्यवस्था में क्षमा का प्रावधान था (लैव्यव्यवस्था 5:18; गिनती 15:27, 28)। परन्तु जानबूझकर किए गए पाप के लिए परमेश्वर ने कहा था:

> परन्तु ज़्या देशी ज़्या परदेशी, जो प्राणी ढिठाई से कुछ करे, वह यहोवा का अनादर करने वाला ठहरेगा, और वह प्राणी अपने लोगों में से नाश किया जाए। वह जो यहोवा के वचन को तुच्छ जानता है, और उसकी आज्ञा का टालने वाला है, इसलिए वह प्राणी निश्चय नाश किया जाएगा; उसका अधर्म उसी के सिर पड़ेगा (गिनती 15:30, 31)।

हारून के पुत्रों नादाब और अबीहू के आज्ञा न मानने की बात पढ़कर हम स्तज़्ध रह जाते हैं। एलियाज़र और इतामार से बड़े उसके इन दोनों लड़कों को विशेष सज़्मान मिला था। वे अपने पिता और चाचा और इस्राएल के सज़र प्राचीनों के साथ सीनै पर्वत पर गए थे। वहां एक अजब बात हुई:

> ... और इस्राएल के परमेश्वर का दर्शन किया; और उसके चरणों के तले नीलमणि का चबूतरा सा कुछ था, जो आकाश के तुल्य ही स्वच्छ था। और उसने इस्राएलियों के प्रधानों पर हाथ न बढ़ाया; तब उन्होंने परमेश्वर का दर्शन किया, और खाया पिया (निर्गमन 24:9-11; देखिए गिनती 3:2)।

इन दो लोगों ने, जिन्हें इतना सज़्मान दिया गया था बाद में यहोवा के सामने "ऊपरी आग" भेंट की (लैव्यव्यवस्था 10:1, 2; देखिए 16:12)। परमेश्वर इस कार्य को नज़रअन्दाज नहीं कर पाया; जिस कारण ये दो ढीठ याजक ज़िंदा जल गए थे। वे दूसरे लोगों के लिए एक मिसाल बन गए कि परमेश्वर चाहता है कि उसके याजक स्वर्ग के निर्देशों की अगुआई में ही रहें।

मसीही लोगों के पास ईश्वरीय चेतावनी के रूप में नादाब और अबीहू का उदाहरण है (रोमियों 15:4)। हमें नेतृत्व ग्रहण करने के विरुद्ध (यू.: *proago*) या मसीह के निर्देशों से "आगे बढ़" जाने (यू.: *parabino*) के विरुद्ध चेतावनी दी गई है (2 यूहन्ना 9)। मसीह की ओर से सब बातें सज़ाईस किताबों में दे दी गई हैं, इसलिए परमेश्वर का भय मानने वाला

याजक धार्मिक मामलों में ''लिखे हुए से आगे'' नहीं बढ़ेगा (1 कुरिन्थियों 4:6)। एक मसीही के लिए अगुआई देने वाला सिद्धांत यह नहीं है कि वह ऐसा कुछ भी कर सकता है जिसकी मनाही नहीं की गई, बल्कि उसे ऐसा नहीं करना चाहिए जिसे करने का अधिकार नहीं दिया गया है। ऐसा कुछ भी करना जिसकी मनाही नये नियम में न हो पवित्र जल, मूर्तियों, धूप, गाने के साथ साज़, मोमबज़ियों, रोज़री, गांजा, डांस और प्रभु भोज के भाग के रूप में फ्राइड चिकन की अनुमति हो सकती है। नये नियम की आराधना में केवल बताई गई बातों के अनुसार करने के लिए आवश्यक है कि संगति, रोटी तोड़ने, प्रार्थना और धन्यवाद सहित परमेश्वर की स्तुति करने या महिमा गाने के लिए प्रेरितों की शिक्षा का पालन किया जाए (प्रेरितों 2:42; इब्रानियों 13:15)। हो सकता है कि नये नियम के याजकों को गाने के साथ साज़ या धूप या फ्राइड चिकन से नफरत न हो, पर वे आराधना में ऐसा कुछ जोड़ने का साहस नहीं करते जिसकी आज्ञा प्रभु ने न दी हो। वे नादाब और अबीहू के पाप को दोहराना नहीं चाहते।

(6) *धूप।* पुराने नियम के याजकों को ''यहोवा के सामने तुज़्हारी पीढ़ी-पीढ़ी में'' पवित्र स्थान में सुबह-शाम रोज सुगंधित धूप जलाना होता था (निर्गमन 30:1-9)। ये शुद्ध और पवित्र मसाले (कुन्दरू नरवी और शुद्ध लोबान) अर्थात नमक से मिलाकर (''गंधी की रीति के अनुसार''), छोटा-छोटा कूटकर सुलगाया जाता था जिससे सुगंधि का एक बादल बन जाता था। प्रभु ने कहा कि यह ''मिलाप वाले तज़्बू में ... जहां पर मैं तुझ से मिला करूंगा वहां'' हो (निर्गमन 30:34-36)। ''वह तुज़्हारे लिए परम पवित्र होगा।'' मसालों का वह विशेष मिश्रण केवल प्रभु की आराधना के लिए होना था। इस सुगंधि से मिलता-जुलता धूप बनाने वाला कोई भी व्यज़्ति ''अपने लोगों में से नाश किया'' जाना था (निर्गमन 30:37, 38)।

पुराने नियम की याजकाई का धूप जलाना नये नियम में बिल्कुल नहीं है। परन्तु महान परमेश्वर के सामने मसीही लोगों की सुबह-शाम प्रार्थनाओं की भेंट में उनके महायाजक, यीशु मसीह के नाम से उस धूप की समानता देखी जाती है (देखिए प्रकाशितवाज़्य 5:8; 8:3, 4)।

(7) *बलिदान।* हारून की याजकाई का मुज़्य काम बलिदान भेंट करना था (देखिए लैव्यव्यवस्था 1-7)। बैलों और मेढ़ों के साथ टूटे मन, पश्चाज़ापी हृदय, शुद्ध जीवन और आज्ञा मानना न होना परमेश्वर को अस्वीकार था (भजन संहिता 40:6; 51:16; 1 शमूएल 15:22; यशायाह 1:11; यिर्मयाह 6:20; 7:22, 23; आमोस 5:22; मीका 6:6-8)। परमेश्वर के प्रबन्ध में रहते हुए सही व्यवहार और जीवन के साथ, पशुओं के बलिदान से उठने वाला धुआं सृष्टि के परमेश्वर के सामने सुगंधित और मन को भाने वाला होता था।

यद्यपि परमेश्वर ने पशुओं की भेंट देने की आज्ञा तो दी थी, परन्तु उसे ध्यान रहता था कि ''अनहोना है, कि बैलों और बकरों का लोहू पापों को दूर करे'' (इब्रानियों 10:4)। परन्तु मेमने की तरह, मरियम के हृदय के नीचे एक मानवीय देह तैयार की गई और फिर उसे परमेश्वर का मेमना घोषित किया गया जो जगत के पाप उठा ले जाता है (इब्रानियों

10:5; यूहन्ना 1:29)। समय के पूरा होने पर यीशु ने ''बकरों और बछड़ों के लोहू के द्वारा नहीं, पर अपने ही लोहू के द्वारा ... अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर'' (इब्रानियों 9:12, 26) दिया। उसका अपना बलिदान न तो प्रतिदिन दिया जाने वाला और न ही वार्षिक था, ऐसे तो उसे जगत की नींव रखने से लेकर बार-बार कष्ट उठाना पड़ता। बल्कि उसने हर युग में परमेश्वर की आज्ञा मानने वाले सब लोगों के लिए एक ही बार बलिदान दे दिया (इब्रानियों 5:9; 9:15)।

मसीही लोगों द्वारा भेंट किए जाने वाले बलिदान में बकरों और बछड़ों को निकाल दिया गया है। नये नियम की सिद्ध व्यवस्था (याकूब 1:25) मसीही लोगों से ''भौतिक नहीं बल्कि 'आत्मिक' बलिदान''[2] (1 पतरस 2:5) चढ़ाने का आह्वान किया गया है। परमेश्वर को स्वीकार्य मसीही भेंटों में स्तुति रूपी बलिदान, उसके नाम का धन्यवाद देना (इब्रानियों 13:15) शामिल है। नये नियम में बलिदान के रूप में जरूरतमंदों की सहायता के लिए प्रेम की भेंटें देने का विशेष वर्णन है (फिलिप्पियों 4:18)। इसके अलावा, परमेश्वर को मुर्दा भेंट नहीं बल्कि एक जीवित बलिदान के रूप में की गई मसीही सेवा स्वीकार्य है (रोमियों 12:1)।

सारांश

नये नियम के मसीहियों को दिया गया आत्मा का संदेश कितना अच्छा है! पुराने नियम की पृष्ठभूमि पर बनाई गई, पत्रियों से मसीही लोगों को हृदय और जीवन से सेवा करने के लिए याजकों के रूप में ऊंचा किया गया है। उसकी जो स्वर्ग की योजनाओं के कर्ज़ा, जो हमेशा मनुष्य की भलाई के लिए काम करता है, की स्तुति महिमा और ... सज़्मान सर्वदा होता रहेगा!

पाद टिप्पणियां

[1]सी. जी विल्के एण्ड सी. एल. विलिबल्ड ग्रिज़्म, *ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* 12वां संस्क., अनु. व संशो. जोसेफ एच. थेयर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशी.: ज़ोंडर्वन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 298.
[2]वहीं।